E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2025; 7(8): 102-106
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 18-05-2025
Accepted: 22-06-2025

योगेश नैन
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान

प्रो. नरेंद्र नाथ
विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान, भारत।

Corresponding Author:
योगेश नैन
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान

भारत-अमेरिका संबंध: वर्तमान नवीन आयाम एवं चुनौतियाँ तथा उभरता रणनीतिक सहयोग

योगेश नैन, प्रो. नरेंद्र नाथ

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26646021.2025.v7.i8b.628

सारांश

21वीं सदी की वैश्विक भू-राजनीतिक परिदृश्य में भारत और अमेरिका संबंधों में एक नए युग की शुरुआत हुई। जिसमें दोनों देशों के मध्य आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामरिक सहयोग के क्षेत्र में नए अवसर विकसित हुए हैं। हाल ही के वर्षों में दोनों देशों के बीच रक्षा उत्पाद, व्यापार, प्रौद्योगिकी, इमर्जिंग इंडस्ट्रीयल एलायंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मेक इन इंडिया फॉर द वर्ल्ड नीति के अंतर्गत संयुक्त रक्षा उत्पाद, इंडो-पैसिफिक रीजन में सहयोग, क्वाड (QUAD), LEMOA, टेक्नोलॉजी डिकाल्पिंग सेमी कंडक्टर आपूर्ति श्रृंखला, जलवायु परिवर्तन,अंतरिक्ष कार्यक्रम आदि क्षेत्रों में सहयोग बढ़ रहा है। इस शोध पत्र में भारत-अमेरिका संबंधों के वर्तमान नवीन आयामों, प्रमुख चुनौतियों और उभरते रणनीतिक सहयोग का विश्लेषण किया गया है। भारत-अमेरिका के मध्य सहयोग की नई संभावनाओं के मध्य द्विपक्षीय विवादों के रूप में व्यापार असंतुलन, रूस युक्रेन युद्ध, इजरायल फ़िलिस्तीन संघर्ष, H-1B वीसा नीति, ब्रिक्स, अवैध प्रवासी भारतीय, अमेरिका की नई टैरिफ़ पॉलिसी आदि अनेक मुद्दे चुनौती स्वरूप उभरकर सामने आए है। यह शोध पत्र दोनों देशों के मध्य संबंधों में उभरते नए आयामों, संभावित नीतिगत समायोजनों और दीर्घकालीन रणनीतिक प्रभावों का गहन विश्लेषण करने के साथ भविष्य की संभावनाओं का अध्ययन किया जाएगा।

शब्द-कुंजी : सिविल परमाणु समझौता, क्वाड (QUAD), इमर्जिंग इंडस्ट्रियल एलायंस, मेक इन इंडिया फॉर द वर्ल्ड नीति, H- 1 B वीसा, न्यू टैरिफ़ पॉलिसी

प्रस्तावना

भारत और अमेरिका के संबंध ऐसे दो राष्ट्रों के मध्य संबंधों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसमें एक वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित है और दूसरा वैश्विक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। दोनों में कुछ समानताएँ एवं विभिन्नताये है। समानता के रूप में दोनों देशों में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली, नागरिक अधिकार, स्वतंत्रता के प्रति प्रतिबद्धता, विविधतापूर्ण संस्कृति, पंथनिरपेक्षता, बहुलवादी समाज तथा दोनों औपनिवेशिक शक्तियों से स्वतंत्रता प्राप्त इत्यादि। विभिन्नता के रूप में भारत में संसदीय शासन व्यवस्था, अमेरिका में अध्यक्षात्मक शासन व्यवस्था, भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था, अमेरिका में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था आदि। वर्तमान वैश्विक भू-राजनीति में विश्व की इन दोनों लोकतांत्रिक शक्तियों के मध्य न केवल राजनीतिक बल्कि आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, सामरिक, तकनीकी, विज्ञान-प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में संबंध स्थापित किए जा रहे हैं। दोनों देशों के मध्य संबंधों का इतिहास 200 वर्षों से भी अधिक पुराना है। इस काल में दोनों के मध्य सहयोग एतिहासिक रूप से कई चरणों में शीत युद्ध की अनिश्चितताओं से लेकर इक्कीसवीं सदी की रणनीतिक साझेदारी तक आगे बढ़े हैं। भारत-अमेरिका संबंधों की सुदृढ़ता वैश्विक और क्षेत्रीय स्थिरता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्तमान में दोनों देशों के मध्य रणनीतिक संबंधों में इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क (IPEF), क्वॉडीलेटरल सिक्योरिटी डायलॉग (QUAD), इमर्जिंग इंडस्ट्रीयल एलाइंस, इनिशिएटिव और क्रिटिकल एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी (iCET), इंडिया-यूएस क्लाइमेट एंड क्लिन एनर्जी एजेंडा-2030 पाटनरशिप, टेक्नोलॉजी डिकाल्पिंग, सेमीकंडक्टर सप्लाई चेन,

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आदि कार्यक्रम द्विपक्षीय संबंधों में नए आयाम के रूप में जुड़े हैं।

वर्तमान में भारत-अमेरिका के मध्य सहयोग के साथ साथ अनेक चुनौतियां भी उभरकर सामने आयी हैं। जिसमें दोनों देशों के मध्य व्यापार असंतुलन, यूएस की नई टैरिफ नीति, अवैध प्रवासी भारतीयों का मुद्दा, H-1B वीजा नीति, बौद्धिक संपदा अधिकार, भारत की डेटा सुरक्षा नीति, इजराइल फ़िलिस्तीन संघर्ष, रूस-युक्रेन युद्ध आदि मुख्य चुनौतियां है। भारत की स्ट्रेटेजिक ऑटोनोमी और अमेरिका की इंडो-पैसिफिक रणनीति के मध्य संतुलन बनाना भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य हैं। भारत अमेरिका संबंधों में प्रगाढ़ता तथा नई सक्रियता प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश के समय में आयी। इस काल में ऐतिहासिक नाभिकीय परमाणु ऊर्जा समझौता 2005 सम्पन्न हुआ।

भारत अमेरिका की मध्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिकन राष्ट्रपति बराक ओबामा के काल वर्ष 2014 में मित्रता का एक नया अध्याय स्वाभाविक साझेदार के रूप में शुरू हुआ। दोनों देशों के मध्य फॉरवर्ड टुगेदर वी गो, साझा प्रयास सबका विकास, हाउड़ी मोदी-नमस्ते ट्रंप कार्यक्रम द्विपक्षीय संबंधों को मज़बूत बना रहे है। वैश्विक स्तर पर भारत की सॉफ्ट पॉवर (सांस्कृतिक शक्ति) में तीव्र वृद्धि हुई है। इस शोध पत्र में भारत अमेरिका संबंधों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, समकालीन सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों, रणनीतिक सहयोग के नवीन आयामों और संभावित चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। इस शोध पत्र का उद्देश्य भारत-अमेरिका संबंधों में सहयोग के नए क्षेत्रों आयामों की खोज करना और भविष्य में उनके स्वरूप को समझने के लिए एक व्यापक दृष्टि प्रदान करना है।

भारतीय विदेश नीति: सैद्धांतिक रूपरेखा

भारतीय विदेश नीति का उद्देश्य राष्ट्रीय सुरक्षा, परस्पर सहयोग, शांतिपूर्ण सह अस्तित्व और विश्व बंधुता की भावना की स्थापना करना है। भारत की विदेश नीति के आदर्शों और उद्देश्यों की झलक भारत के संविधान में भी मिलती है। संविधान के भाग 4 के अनुच्छेद 51 में उल्लेखित है भारत अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देने हेतु तत्पर रहेगा।[1] अंतरराष्ट्रीय राजनीति में समय समय पर विभिन्न विद्वानों ने विदेश नीति तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों को परिभाषित किया है। ईसा पूर्व ग्रीक यथार्थवादी थ्यूसीडाइस ने अपनी रचना The Peloponnesian War (430-406 ई.पू.) में विदेश नीति के संदर्भ में कहा कि,'अंतरराष्ट्रीय राजनीति शक्ति के लिए अंतहीन संघर्ष है जिसकी जड़ें मानव स्वभाव में निहित है।'[2] प्राचीन भारतीय यथार्थवादी राजनीतिक विचारक कौटिल्य द्वारा अपने ग्रंथ अर्थशास्त्र (350-283 ई.पू.) में विदेश नीति के संदर्भ में मंडल सिद्धांत का प्रतिपादन किया। [3] कौटिल्य के अनुसार,'राष्ट्रों की भौगोलिक स्थिति के आधार पर पारस्परिक संबंधों का निर्माण किया जाता है जैसे मंडल सिद्धांत वर्तमान भारत-पाकिस्तान- चीन संबंधों पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

आधुनिक राजनीतिक यथार्थवादी विचारक मैक्यावली ने अपनी प्रसिद्ध ग्रंथ The Prince (1532) में अंतरराष्ट्रीय राजनीति में संबंधों को परिभाषित करते हुए कहा कि,'राज्य के नेता का अंतिम कौशल है कि वह विश्व राजनीति में बदलते सता-विन्यास को स्वीकार करें और उसके अनुकूल बने जिससे अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति संतुलन स्थापित होगा।[4]

अंतरराष्ट्रीय राजनीति में बढ़ते अराजकता पूर्ण वातावरण के लिए हॉब्स का कथन तर्कसंगत प्रतीत होता है। हॉब्स के अनुसार", आधुनिक काल में संप्रभु राज्यों के मध्य प्राकृतिक अवस्था वाली अराजकता की स्थिति विद्यमान् है जिसमें युद्ध की स्थिति निरंतर बनी रहती है।[5] (Leviathan 1651) वहीं रूसो ने अपनी रचना The state of war (1750) में कहा कि', अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में मानव स्वभाव नहीं अपितु अराजक प्रणालियाँ ही भय, ईर्ष्या, संदेह और असुरक्षा को बढ़ावा देती है।[6] नव शास्त्रीय यथार्थवादी विचारक ई.एच. कार अपनी पुस्तक प्रसिद्ध पुस्तक The twenty years crisis (1919-1939) में अंतरराष्ट्रीय शांति के लिये सामंजस्य को बढ़ावा देते हुए कहते हैं कि प्राकृतिक सामंजस्य विश्व शांति को बढ़ावा देता है।[7] विदेश नीति को सुस्पष्ट परिभाषित करने का कार्य सर्वप्रथम जॉर्ज मॉडल्स्की ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक A Theory of Foreign Policy (1962) में किया", विदेश नीति समुदायों द्वारा विकसित उन क्रियाओं की व्यवस्था है जिसके द्वारा एक राष्ट्र दूसरे राज्य के व्यवहार को बदलने तथा अपनी गतिविधियों को अंतरराष्ट्रीय वातावरण में ढालने की कोशिश करता है।[8] यथार्थवादी विद्वान हेंस जे. मार्गेंथाउ ने अपनी कृति पॉलिटिक्स अमंग नेशन (1948) में अंतरराष्ट्रीय राजनीति को शक्ति के लिए संघर्ष माना है तथा सभी राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति की लिए अधिक से अधिक शक्ति अर्जित करने का प्रयास करते हैं।[9] संरचनात्मक यथार्थवादी विचारक केनेथ वाल्टेज ने अपनी कृति Theory of International Politics (1979) के अनुसार अंतरराष्ट्रीय संबंधों के वैश्विक परिदृश्य में सुरक्षात्मक यथार्थवाद परिलक्षित होता है तथा प्रत्येक देश अपनी सुरक्षा के लिए अपनी शक्ति को बढ़ाना चाहता है।[10]

अमेरिकी विद्वान फ्रान्सीसी फ़ुकुयामा ने अपनी कृति The End of History and Last Man (1992) में नवीन अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था का उल्लेख करते हुए कहा कि,"आंतरिक राजनीतिक व्यवस्थाओं का विस्तार अंतरराष्ट्रीय संघर्ष का विनाश कर देगा।"[11] आधुनिक राजनीतिक विचारक जॉन मेयर शिमर ने अपनी रचना The Tragedy of Great Power Politics (2001) में अंतरराष्ट्रीय राजनीति में राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रमुख मानते हुए कहा कि,'राष्ट्र की सुरक्षा हेतु आक्रामक यथार्थवाद अर्थात सापेक्ष शक्ति को ग्रहण करना आवश्यक है।'[12]

भारतीय विदेश नीति आदर्शवादी सिद्धांत पर आधारित है जिसमें गुट निरपेक्ष, पंचशील, उपनिवेशवाद का विरोध, संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन, आतंकवाद की समाप्ति, ऊर्जा सुरक्षा, पर्यावरण सुरक्षा, उच्च मानव विकास, लोकतंत्र आदि को प्राथमिकता दी गई है।

भारत-अमेरिका संबंध: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् दोनों देशों के मध्य संबंधों में काफ़ी उतार चढ़ाव भरे रहे। दोनों देशों के मध्य भिन्न-भिन्न सामाजिक और राष्ट्रीय हितों के कारण समय समय पर तनावपूर्ण संबंध रहे जिनके प्रमुख कारणों में भारत का मिश्रित अर्थव्यवस्था अपनाना,साम्यवाद की तरफ़ झुकाव तथा भारत का गुटनिरपेक्षता की विदेश नीति को स्वीकार करना आदि रहे। वर्तमान वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य में शीत युद्ध काल के बाद दोनों राष्ट्रों के बदले आपसी संबंध मधुर तथा सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ें तथा अपने-अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए एक दूसरे का सहयोग तथा साझेदारी को लगातार आगे बढ़ा रहे हैं।

भारत अमेरिका के संबंधों का इतिहास पुराना है। दोनों देशों के मध्य राजनयिक संबंधों की शुरुआत वर्ष 1790 में अमेरिकन राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन द्वारा कलकत्ता में वाणिज्य दूत की नियुक्ति करने से प्रारंभ हुई। स्वतंत्रता से पूर्व दोनों देशों के मध्य संबंध सामान्यत तनाव रहित रहे लेकिन स्वतंत्रता के बाद भारत द्वारा समाजवादी व्यवस्था और गुट निरपेक्षता की नीति अपनाये जाने के कारण दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय संबंधों में अविश्वास और आशंकाओं का जन्म हुआ। शीत युद्ध काल से लेकर वर्तमान तक दोनों देशों के मध्य वर्ष 1965 में भारत चीन युद्ध में भारत का समर्थन, वर्ष 1960 में PL-480 समझौता, वर्ष 1964 में संयुक्त वायुसेना अभ्यास, वर्ष 1975 में भारत अमेरिका संयुक्त आयोग की स्थापना, वर्ष 1984 में संयुक्त अंतरिक्ष शटल मिशन, वर्ष 1987 में सुपर कंप्यूटर समझौता, वर्ष 1991 में संयुक्त नौसेना अभ्यास 'मालाबार युद्धाभ्यास' वर्ष 2000 में दृष्टिकोण पत्र/दृष्टि पत्र, वर्ष 2001 में वैश्विक आतंकवाद उन्मूलन आदि अनेक क्षेत्रों में सहयोग प्रारंभ हुआ।[13] वहीं दूसरी तरफ़ इस काल में अविश्वास और विरोधाभास का जन्म, भारत की गुट निरपेक्षता की नीति, भारत सोवियत संघ मैत्री संधि, अमेरिका का वियतनाम पर हमले की भारत द्वारा आलोचना, वर्ष 1972 के भारत पाकिस्तान युद्ध में अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को सैनिक सहायता देना, अमेरिका का जम्मु कश्मीर पर पाकिस्तान समर्थन, वर्ष 1974 और 1998 में भारत का परमाणु परीक्षण, भारत द्वारा NPT और CTBT पर हस्ताक्षर नहीं करना आदि मुद्दों की परिणीति रहा। [14]

भारत अमेरिका संबंधों में प्रगाढ़ता एव नई सक्रियता प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह एवं अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश के काल में आयी। अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश ने भारत को 'वैश्विक शक्ति' कहा। इस दौर में वर्ष 2005 में ऐतिहासिक हवाई समझौता, न्यू फ्रेमवर्क फॉर दी यूएस-इंडिया डिफेंस रिलेशनशिप समझौता और अप्रत्याशित भारत अमेरिका परमाणु ऊर्जा समझौता आदि महत्वपूर्ण समझौते संपन्न हुए।[15]

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सितंबर 2014 अमेरिकी यात्रा दोनों देशों के मध्य सुदृढ़ संबंधों में महत्वपूर्ण स्थान रखने के साथ ही विश्व राजनीति में उभरती भारतीय सांस्कृतिक (शक्ति सॉफ्ट पॉवर) के रूप में एक महत्वपूर्ण क़दम माना जाता है जिसमें भारत के प्रयासों से संयुक्त राष्ट्र महासभा में 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' मनाने का प्रस्ताव पारित कर प्रतिवर्ष 21 जून को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया।[16]

वर्ष 2014 की अमेरिका यात्रा के दौरान भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भारत-अमेरिकी द्विपक्षीय संबंधों को नई ऊंचाइयों पर ले जाने, आतंकवाद से लड़ने में सहयोग की प्रतिबद्धता जतायी और दोनों देशों द्वारा संयुक्त बयान जारी कर कहा कि", भारत-अमेरिका स्वाभाविक साझेदार" हैं।[17]

भारत अमेरिकी संबंधों में एक एतिहासिक अध्याय जनवरी 2015 में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा की भारत यात्रा के रूप में जुड़ा जिसमें बराक ओबामा भारत के 66 वें गणतंत्र दिवस (2015) पर मुख्य अतिथि बनने वाले प्रथम अमेरिकन राष्ट्रपति बने जो भारत-अमेरिकी संबंधों में बढ़ते विश्वास को प्रदर्शित करता है।[18] आज दोनों ही राष्ट्र एक समान उद्देश्यों का अनुसरण करते हैं 'चलें साथ साथ' (फॉरवर्ड टुगेदर बी गो) तथा 'साझा प्रयास सबका विकास' जिन्हें वर्ष 2015 में अपनाया गया।[19] वर्ष 2015 में भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूसरी अमेरिका यात्रा के दौरान अमेरिका में कांग्रेस के संयुक्त अधिवेशन को संबोधित किया जिसमें दोनों देशों के उच्च स्तरीय लोकतंत्र की विशेषताएं गिनाई तथा दोनों देशों की मित्रता का उल्लेख किया।

भारत अमेरिका की मित्रता के एक नए अध्याय के रूप में सितंबर 2019 को भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा जिसमें ह्यूस्टन के एन.आर.जी. स्टेडियम में आयोजित 'हाउड़ी मोदी' कार्यक्रम में विशाल अमेरिकी भारतीय समुदाय को संबोधित करना और इसी क्रम में फ़रवरी 2020 की अमेरिकन राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की भारत यात्रा में अहमदाबाद के मोटेरा में आयोजित 'नमस्ते ट्रंप' कार्यक्रम महत्वपूर्ण है।[20]

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के काल में द्विपक्षीय संबंधों में गति आई। भारत में आयोजित वर्ष 2023 का G-20 शिखर सम्मेलन भारत का महाशक्ति के रूप में वैश्विक नेतृत्व क्षमता को प्रदर्शित करने का एक ऐतिहासिक अवसर बना। अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बनकर उभरा। दोनों देशों के बीच वर्ष 2023 में कुल व्यापार 191 बिलियन डॉलर के स्तर को पार कर गया। हाल ही में अमेरिका में संपन्न राष्ट्रपति चुनाव में अपने दूसरे कार्यकाल के लिए नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनॉल्ड ट्रंप और भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच घनिष्ठता भारत अमेरिकी संबंधों में महत्वपूर्ण परिवर्तन और सुदृढ़ीकरण की संभावना को दर्शाता है।नव निर्वाचित अमेरिकन राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'इक्कीसवीं सदी के लिए यूएस-इण्डिया कॉम्पेक्ट" पहल की शुरुआत की है जिसका उद्देश्य सैन्य साझेदारी, वाणिज्य और तकनीकी सहयोग को बढ़ावा देना है। दोनों देशों ने द्विपक्षीय व्यापार व निवेश के क्षेत्र में 'मिशन 500' लक्ष्य निर्धारित किए हैं जिसका उद्देश्य 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को 500 अरब डॉलर तक पहुँचाना है।

भारत-अमेरिका संबंध: प्रमुख चुनौतियाँ

भारत और अमेरिका के द्विपक्षीय संबंधों में पिछले एक दशक में सुदृढ़ता आयी है। आज दोनों देश लोकतंत्र, मुक्त बाजार और वैश्विक

स्थिरता को बनाए रखने के लिए साझा मूल्यों पर अग्रसर है। लेकिन दोनों देशों के सामने कई गंभीर चुनौतियां हैं जो दोनों के द्विपक्षीय संबंधों को जटिल बनाती है। ये चुनौतियां व्यापार, रक्षा, भू-राजनीति, टेक्नोलॉजी, मानवाधिकार, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा जैसे अनेक मुद्दों पर फैली हुई है। वर्तमान में अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बना है लेकिन हाल ही में दोनों देशों के मध्य अमेरिका के नए टैरिफ, अमेरिका का द्विपक्षीय व्यापार घाटा, भारत को अमेरिका द्वारा 'जनरलाइज्ड सिस्टम ऑफ प्रेफरेंस (GPS)' से बाहर करना आदि विवाद अभी शुरू हुए है। रक्षा के क्षेत्र में भारत द्वारा रूस निर्मित एस-400 मिसाइल सिस्टम सौदा, यूएस का एफ-35 फाइटर जेट और रूस निर्मित एसयू-57 ख़रीद पर संसय आदि दोनों देशों के मध्य विवाद का कारण बन रहे हैं। इसके भारत का चीन के साथ व्यापार, भारत का नया डेटा लोकलाइजेशन नियम, अमेरिका का H-1B वीजा नियम पर सख़्ती, अवैध भारतीय प्रवासियों का मुद्दा आदि विवाद महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं। अमेरिका द्वारा 7 फ़रवरी 2025 को भारत भेजे गए अवैध भारतीय प्रवासियों के साथ अमानवीय व्यवहार कर हथकड़ियाँ लगा भारत भेजने का विवाद ज्वलंत समस्या के रूप में उस समय सामने आया जब इसके कुछ दिन बाद 15 फ़रवरी 2025 को भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा प्रस्तावित थी। फ़रवरी 2025 में पेरिस में संपन्न आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस (AI) एक्शन समिट के घोषणा पत्र से अमेरिका का अलग होना भी कहीं ना कहीं भारत अमेरिकी संबंधों को नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की बहुचर्चित रेसिप्रोकल टैरिफ़ (जैसा को तैसा शुल्क) नीति के तहत 2 अप्रैल 2025 को भारत पर 26 प्रतिशत टैरिफ़ लगाने से दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय व्यापार संबंधों में एक नई चुनौती बन कर उभरी है। इस टैरिफ़ से भारत के अमेरिका को निर्यात पर लगभग 35 अरब रुपये का भार पड़ेगा। हाल ही में कुछ घटनाओं जिसमें एफ-1 वीसा का ऑप्शनल प्रैक्टिकल ट्रेनिंग (ओ टी पी) खत्म करना, भारत-पाक युद्ध में मध्यस्थता करने और सीज फायर करवाने का डोनाल्ड ट्रंप द्वारा श्रेय लेना, ट्रंप सरकार द्वारा ईरान से ट्रेड पर छह भारतीय कंपनियों पर बैन लगाना, ट्रंप द्वारा भारत का रूस के साथ तेल, गैस और रक्षा सामग्रियों के व्यापार को कम करने का दबाव बनाना, ट्रंप द्वारा 1 अगस्त 2025 से भारत पर 25 प्रतिशत टैरिफ़ व जुर्माना लगाना, डोनाल्ड ट्रंप द्वारा कटाक्ष करते हुए भारतीय इकोनॉमी को डेड कहना आदि ने भारत-अमेरिकी द्विपक्षीय संबंधों के समक्ष नई चुनौतियाँ बन कर सामने आई है।

भारत-अमेरिका संबंध: उभरता रणनीतिक सहयोग

भारत अमेरिका संबंध वर्तमान में अपने स्वर्णिम स्तर पर पहुँच गए हैं जिसमें भारत अमेरिका का विश्वसनीय रणनीतिक सहयोगी बन गया है। भारत अमेरिका के मध्य सामरिक संबंधों की शुरुआत वर्ष 2004 के 'नेक्स्ट स्टेप इन स्ट्रैटजिक पार्टनरशिप (NSPP) समझौते से शुरू हुई तथा वर्तमान तक दोनों राष्ट्रों के मध्य समानांतर रूप से अनेक महत्वपूर्ण समझौते संपन्न हुए जिनमें 'जनरल सिक्युरिटी ऑफ मिलिट्री इंफॉर्मेशन एग्रीमेंट (GSOMIA) 2002, भारत-अमेरिका सिविल परमाणु समझौता 2005, संचार सुरक्षा समझौता (COMCASA) 2008, डिफेंस ट्रेड एंड टेक्नोलॉजी इनिशिएटिव (DTTI) 2015, लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA) 2016, औद्योगिक सुरक्षा एनेक्सर (ISA) 2020, बेसिक एक्सचेंज एंड को-ऑपरेशन एग्रीमेंट (BECA) 2020 आदि प्रमुख हैं। अमेरिका के साथ इन विभिन्न समझौतों में उच्च स्तरीय रक्षा संधियों के साथ एक दूसरे को सैन्य तकनीक साझा करना, सूचनाओं का आदान प्रदान करना और आपातकाल में एक दूसरे के सैन्य क्षेत्र का सैनिक उपयोग करना सम्मिलित है। इससे दोनों देशों के मध्य कूटनीतिक तथा रणनीतिक संबंधों में मज़बूती के साथ नई ऊंचाईयों तथा ऊर्जा मिलेगी।

हिन्द महासागर क्षेत्र तथा दक्षिण एशिया में भारत का उभार एक वैश्विक संतुलन कर्ता के रूप में हुआ तथा अमेरिका द्वारा इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकने व प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा व स्थिरता बनाए रखने के लिए दोनों देश क्वॉडी लेटरल डायलॉग (QUAD) में भागीदार है इसमें वार्षिक नोसैन्य अभ्यास 'मालाबार सैनिक अभ्यास' का आयोजन करते हैं।

वैश्विक महामारी कोविड-19 के काल में विश्व के समक्ष एक नई समस्या पैदा हुई जिसके विरुद्ध वैश्विक लड़ाई में दोनों देशों ने मिलकर एक बड़ी लड़ाई लड़ी। कोविड-19 महामारी के कारण भारत और अमेरिका को अत्यधिक जन हानि हुई। भारत ने इस महामारी के समय वैश्विक स्तर पर एक महाशक्ति के रूप में उभरकर सामने आया और अमेरिका के साथ साथ अन्य 100 देशों को आपातकालीन सहायता के रूप मे आवश्यक दवाई, चिकित्सा उपकरण, वेक्सीन भेजी।

भारत अमेरिका के मध्य उभरते रणनीतिक सहयोग के रूप में दोनों देशों के मध्य संबंधों को अंतरिक्ष कार्यक्रमों में वर्ष 2022 में इसरो और नासा ने मिलकर नासा-इसरो सिंथेटिक एपर्चर रडार (NISAR) उपग्रह लांच करना अत्यंत महत्वपूर्ण बनाता है। दोनों देशों ने जनवरी 2023 में क्रिटिकल एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी में सहयोग बढ़ाने के लिए इनिशिएटिव ऑन क्रिटिकल एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी (iCET) कार्यक्रम लांच जिसके अंतर्गत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), क्वांटम कम्प्यूटिंग, सेमीकंडक्टर्स में को-प्रोडक्शन को बढ़ावा देना मुख्य उद्देश्य है। अगस्त 2023 का यूएस-इंडिया रिन्यूएबल एनर्जी टैक्नोलॉजी एक्शन प्लेटफार्म (RETAP) लांच किया गया जिसका उद्देश्य नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों में सहयोग को बढ़ाना है। वर्ष 2023 में शुरु इंडिया-यूएस डिफेंस एसिलेरेशन इकोसिस्टम (INDUS-X) पहल द्वारा सरकारों, व्यवसायों और शैक्षणिक संस्थाओं के बीच बढ़ते रक्षा नवाचार और सहयोग पर बल दिया गया। दोनों देश इंडो-पैसिफिक रीजन में सहयोग, क्वाड की मज़बूती के लिए आपसी सहयोग बढ़ा कर क्षेत्रीय सुरक्षा को बढ़ाने और चीन के बढ़ते प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए तत्पर है। हाल ही में प्रधानमंत्री मोदी की फ़रवरी 2025 की अमेरिका यात्रा के समय दोनों देशों ने भारत-अमेरिका सिविल न्यूक्लियर डील को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की तथा दोनों देश 'ट्रस्ट इनिशिएटिव' के ज़रिए

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), सेमीकंडक्टर क्वांटम और स्पेस मिशन, नेक्स्ट जेनरेशन एआई डेटा सेंटर बनाने आदि क्षेत्रों में सहमति बढ़ाने पर सहमति बनायी है।[21] अमेरिकी उपराष्ट्रपति जे. डी. वेंस 21 अप्रैल से 24 अप्रैल 2025 तक भारत की आधिकारिक यात्रा पर रहें। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य भारत-अमेरिका द्विपक्षीय संबंधों को मज़बूत करना तथा व्यापार, रक्षा और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाना रहा। दोनों देशों ने रक्षा समझौते एव ट्रेड समझौते को जल्दी ही सम्पन्न करने पर सहमति व्यक्त की गई। इसमें गोला बारूद से लेकर स्ट्राइकर काम्बैट व्हीकल्स का निर्माण सयुंक्त रूप से करने पर सहमति जताई। हाल ही में भारत-अमेरिकी द्विपक्षीय व्यापार संबंध अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की रेसीप्रोकल टैरिफ़ नीति ने व्यापार संबंधों को नुक़सान पहुँचाया है। इससे निपटने के लिए दोनों देशों के मध्य नई ट्रेड डील के लिए लगातार वर्ताओं का दौर जारी है। इस ट्रेड डील के पूर्ण होने तक दोनों देशों के मध्य मिनी ट्रेड डील के आसार बन रहे हैं जिसमें द्विपक्षीय व्यापार के कुछ बिंदुओं पर सहमति बनी है। दोनों देशों के मध्य रक्षा साझेदारी को बढ़ाने के लिए 10 साल का डिफेंस फ्रेमवर्क तैयार किया गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा भारत का पाक समर्थित आतंकी ग्रुप पर कार्यवाही करने के फैसले को सही बताना तथा पाकिस्तान समर्थित टी आर एफ (द रेजिस्टेंस फ्रंट) को विदेशी आतंकी संघटन (एफ टी ओ) और नामित वैश्विक आतंकी (एस डी जी टी) घोषित करना दोनों देशों का वैश्विक आतंकवाद के ख़िलाफ़ समर्थन व एकजुटता को दर्शाता है।

भारत अमेरिका की रणनीतिक साझेदारी और अधिक ऊंचाइयों पर जाएगी क्योंकि दोनों देशों के राजनीतिक, रणनीतिक तथा राष्ट्रीय हित एक समान है। दोनों देश विश्व के महान् लोकतंत्र हैं और इनके संबंधों को 75 वर्ष 'डायमंड जुबली' पूर्ण किया है। भविष्य में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंध रक्षा, ऊर्जा, सुरक्षा, मानसून परिवर्तन, उच्च स्तरीय तकनीकी आदान-प्रदान, आर्थिक सहयोग, संयुक्त रूप से रक्षा उत्पाद और वैश्विक आतंकवाद के ख़िलाफ़ लड़ाई आदि में सहयोग के आधार पर तय किए जाएंगे।

निष्कर्ष

वैश्विक भू-राजनीतिक परिदृश्य में भारत-अमेरिकी संबंधों तेज़ी से विकसित हो रहे हैं जिसमें रणनीतिक, आर्थिक, रक्षा, तकनीकी एवं ऊर्जा सहयोग के नए आयाम जुड़ते जा रहे है। दोनों देशों के मध्य यह सहयोग व साझेदारी मात्र द्विपक्षीय हितों तक सीमित न होकर इंडो-पैसिफिक रीजन में स्थिरता, वैश्विक आपूर्ति शृंखला का पुनर्गठन, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक आतंकवाद जैसी साझा चुनौतियों से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हाल ही के वर्षों में क्वॉड (QUAD), I2U2, रक्षा समझौते, COMCASA, BECA, LEMOA, इमर्जिंग इंडस्ट्रीयल अलाइंस, नासा-इसरो सिंथेटिक एपर्चर रडार (NISAR) उपग्रह, इनिशिएटिव ऑन क्रिटिकल एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी (iCET) क्वांटम कम्प्यूटिंग, सेमीकंडक्टर आपूर्ति श्रंखला, यूएस-इंडिया रिन्यूएबल एनर्जी टैक्नोलॉजी एक्शन प्लेटफार्म (RETAP), नेक्स्ट जनरेशन, एआई डेटा सेंटर आदि क्षेत्रों में सहयोग ने द्विपक्षीय संबंधों को नई दिशा दी है। दोनों देशों के मध्य व्यापार संतुलन, अमेरिका की रेसीप्रोकल टैरिफ़ नीति, भारत-रूस रक्षा संबंध, H-1B वीसा नीति, अवैध प्रवासी भारतीयों से जुड़ी नीतियाँ चुनौतियां भी प्रस्तुत करती है। भविष्य की दृष्टि से भारत अमेरिका संबंध रणनीतिक साझेदारी से आगे बढ़कर 'वैश्विक शक्ति संतुलन की धुरी' के रूप में उभर रहे है। दोनों देशों को बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग, आपसी विश्वास को बढ़ाना, स्वतंत्र और समावेशी वैश्विक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए दीर्घकालीन रणनीति अपनानी होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय, जय जय राम, भारत का संविधान बेयर एक्ट, सेंट्रल लॉ एजेंसी 2022 पृ. 24
2. जैन, पुखराज, प्रतिनिधि भारतीय राजनीति विचारक, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा पृ. 44
3. गाबा, ओमप्रकाश, राजनीतिक विचारक विश्वकोश, नेशनल पेपर बेक्स दिल्ली 2020 पृ. 196
4. फड़िया, बी. एल., कुलदीप फड़िया, प्रमुख पश्चिमी राजनीतिक विचारक, कॉलेज बुक हाउस 2021 पृ. 172
5. गाबा, ओम प्रकाश, पाश्चात्य राजनीति विचारक, मयूर बुक्स नई दिल्ली 2018 पृ. 160
6. कार, ई. एच., द ट्वेंटी ईयर क्राइसिस 1919-1939 मैकमिलन पब्लिशिंग कंपनी 1949 पृ. 213
7. मॉडल्स्की, जार्ज, ए थ्योरी ऑफ़ फ़ॉरेन पॉलिसी, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस पृ. 148
8. कुमार, महेंद्र, नंद लाल, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के सैद्धांतिक पक्ष, शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी आगरा पृ. 44
9. घई, यू. आर., के.के.घई, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, न्यू एकेडमिक पब्लिशिंग कंपनी जालंधर 2019 पृ. 47
10. गाबा, ओम प्रकाश, राजनीति सिद्धांत की रुपरेखा, मयूर पेपर बैक्स नई दिल्ली 2015 पृ. 37
11. शिमर, जॉन मेयर, ट्रेजडी ऑफ़ ग्रेट पॉवर पॉलिटिक्स, नॉर्टन एंड कंपनी (न्यूयॉर्क) 2001 पृ. 448
12. मर्फी, जॉन एम. हेटोरिक एंड पब्लिक अफ़ेयर्स, मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी 2003 पृ. 607
13. पंत, पुष्पेश, जितेंद्र कुमार पांडेय, मेग्रा हिल्स, नोएडा, 2023
14. बिस्वाल, तपन, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, द ओरियंट ब्लैक स्वान, दिल्ली 2016
15. फड़िया, बी. एल., कुलदीप फड़िया, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन आगरा 2020 पृ. 389
16. https://www.un.org/en/observances/yoga-day
17. फड़िया, बी. एल., कुलदीप फड़िया, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन आगरा 2020 पृ. 391
18. वहीं, पृ. 392
19. वहीं, पृ. 392